वाल्मीकि रामायण में कृषि का महत्त्व

डॉ0 गुंजन गर्ग

सहायक आचार्य
संस्कृत, राजकीय महाविद्यालय, गंगापुर सिटी

शोध सारांशः–
संस्कृत साहित्य जगत् में महाकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित रामायण आदिकाव्य के नाम से प्रसिद्ध है। यह काव्य अपनी लोकप्रियता के कारण आज भी भारतीय जनमानस में अपनी आदर्श स्थिति बनाए हुए है। भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार तथा भारत की अधिकांश जनता की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि है। वाल्मीकि रामायण में रामायणकालीन समाज की समृद्धता का कारण भी वहाँ की समृद्ध कृषि व्यवस्था है। यहाँ के कोशल, मलद, करुष, स्यन्दिका तथा सोन नदी के तट पर बसे जनपद, मधुरपुर जनपद कृषि की उन्नत व्यवस्था के कारण ही समृद्ध थे। यहाँ राजा किसानों की प्रत्येक समस्या का निवारण करते थे और उनको संरक्षण देते थे। रामायण काल में भी ऋतु के अनुसार कृषि की जाती थी। कृषि के लिए सिंचाई का प्रमुख साधन वर्षा थी। लेकिन साथ ही वर्षा के जल को एकत्रित करने का कार्य भी किया जाता था। यहाँ वर्षा के जल के अतिरिक कुओं, नहरों, बावडियों, जलाशयों तथा बाँध आदि से भी सिंचाई करने का वर्णन प्राप्त होता है। रामायणकाल में भी प्राकृतिक आपदाओं का वर्णन प्राप्त होता है, जो कृषि को प्रभावित करती थी। इस प्रकार रामायणकालीन समाज में कृषि की महिमा का वर्णन करना ही इस शोधपत्र का प्रतिपाद्य विषय है।

मुख्य बिन्दुः– वाल्मीकिरामायण, कृषि, जनपद, कोशल, मलद, करूष, मधुरपुर, भूमिशोधन, सीता, कोष्ठागार, धान्यकोश, राजा, तण्डुल, तिल, चना, लाजा, वर्षा, बाँध, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष इत्यादि।

संस्कृत वाङ्मय में 'रामायण' का विशेष स्थान है। यह महाकाव्य रामायणकालीन जीवनदर्शन को प्रस्तुत करता है। वहां के लोगों की सभ्यता और संस्कृति की झलक हम महाकाव्य के श्लोकों में अनुभव कर सकते हैं। पुरुषार्थ–चतुष्ट्य का एक अंग 'अर्थ' मानव जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है। इसके स्रोत के रूप में कृषि, पशुपालन, व्यापार आदि को स्वीकार किया जा सकता है, जो रामायणकालीन समाज की आजीविका के प्रमुख साधन थे।
इन सभी आय के साधनों में आर्थिक व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि ही था। 'रामायण' में वर्णित अनेक जनपदों की समृद्धि का कारण उनकी धान्य सम्पत्ति है, जिसे अनेकत्र देखा जा सकता है–

1. समृद्ध जनपदः–

'रामायण' में अनेक स्थानों पर जनपदों की समृद्धि के प्रतीक रूप में उनकी सस्य सम्पत्ति और धनधान्यता का उल्लेख मिलता है, जैसे कोशल के संदर्भ में कहा गया है–

कोशलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान्।
निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान्।।[1]

कोशल जनपद में ही विद्यमान अयोध्यापुरी धनधान्य से पूर्ण थी। वहां कोई भी परिवार अभावग्रस्त नहीं था– कुटुम्बी यो ह्यसिद्धार्थोऽगवाश्वधनधान्यवान्[2] तथा नामृष्टभोजी[3], नाल्पभोगवान्[4] आदि पद इसी बात को सूचित करते है। वहां भृत्य और दासों के लिए भी शुद्ध और पवित्र भोजन की व्यवस्था थी। खेत जोतने में समर्थ पशुओं की भी अधिकता थी। सभी दुर्गादि भी धनधान्य सम्पन्न थे।

अयोध्यापुरी की समृद्धता इस श्लोक में देखी जा सकती है–

इयं सराष्ट्रा सजना धनधन्यमाकुला।
मया विसृष्टा वसुधा भरताय प्रदीयताम्।।[5]

वनवास के लिए प्रस्थान करते समय समीपस्थ ग्रामों की जुती हुई भूमि 'ग्रामान् विकृष्टसीमान्तान्'[6] तथा धनधान्य सम्पन्न कोशल को लांघना 'ततो धान्यधनोपेतान्'[7] और राम का अनुगमन करते हुए अयोध्यावासियों का समस्त उद्यान, खेतादि का त्याग करना[8] इत्यादि उद्धरण कृषि की परिपक्व अवस्था को बताते हैं।

कोशल के अतिरिक्त अन्य अनेक जनपदों का भी उल्लेख प्राप्त होता है, जो धनधान्य सम्पन्न थे, जिनमें हैं– मलद और करूष –

मलदाश्च करूषाश्च मुदिताः धनधान्यतः।[9]

ये जनपद पूर्व में धनधान्य सम्पन्न थे और बाद में राक्षस और ताड़का नाम की राक्षसी द्वारा उनका विनाश कर दिया गया।[10] मागधी नाम से प्रसिद्ध सोन नदी के तटों पर अत्यन्त उपजाऊ खेत थे, जिससे वह सदैव सस्य सम्पन्न रहती थी– 'सुक्षेत्रा सस्यमालिनी'।[11] स्यन्दिका नदी के पार अवान्तर जनपदों से घिरी हुई भूमि भी धान्यसम्पन्न थी – 'स्फीतां राष्ट्रवृतां रामो वैदेहीमन्वदर्शयत्।[12] इसी परिप्रेक्ष्य में वत्स देश को भी उल्लेखित किया गया है–

ततः समृद्धाञ्शुभसस्यमालिनः।
क्रमेण वत्सान् मुदितानुपागमत्।।[13]

रावण द्वारा मारीच के आश्रम में जाते समय सिन्धु के तट पर बसे हुए समृद्ध जनपदों को देखना तथा वहाँ की शस्य सम्पदा का उल्लेख दर्शनीय है – धनधान्योपपन्नानि ..... नगराणि विलोकयन्।[14] लवणासुर का वध करके शत्रुघ्न द्वारा पुनः मधुरापुरी नगर बसाया गया और वह भी शीघ्र हरे भरे खेतों वाला हो गया था –

क्षेत्राणि सस्ययुक्तानि काले वर्षति वासवः।[15]

इस प्रकार कोशल, मलद, करुष जनपद तथा सोन, स्यन्दिका तथा सिन्धु के तट पर बसे हुए जनपद और मधुरपुर जनपद की धनधान्यसम्पन्नता प्राप्त होती है।

2. राज्य के संरक्षण में सुरक्षित कृषिः–

किसी राज्य की आर्थिक उन्नति शासन अथवा राजा के पर्याप्त संरक्षण में होती है। रामायणकाल में भी कृषि को राजकीय संरक्षण प्राप्त था। स्वयं राजा भी कृषि ज्ञान से पूर्ण परिचित होता था। स्वयं राजा जनक जब हल चलाकर भूमि–शोधन कर रहे थे, तब उन्हें जोती हुई भूमि (सीता) से कन्यारत्न सीता की प्राप्ति हुई थी–

अथ में कृषतः क्षेत्रं लाङ्गलादुत्थिता ततः।
क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता।।[16]

भूमि–शोधन करते हुए राजा जनक के लिए प्रयुक्त विशेषण 'नरपतिर्मुष्टिविक्षेपतत्परः'[17] उनके कृषि सम्बन्धी ज्ञान को बताता है। कृषि और गोरक्षा पर जीवन व्यतीत करने वाले वैश्यों का भरण–पोषण करना राजा का ही कर्तव्य था।[18] राज्य की समृद्धि के लिए उनकी प्रसन्नता और संतुष्टि आवश्यक थी, इसलिए श्रीराम चित्रकूट पर मिलने के लिए आए भरत से पूछते हैं–

कच्चित् ते दयिताः सर्वे कृषिगोरक्षजीविनः।[19]

कृषकों की उपज को सुरक्षित रखने के लिए धान्यकोशों की व्यवस्था की जाती थी। राम के वन जाते समय राजा दशरथ ने आज्ञा दी थी, कि मेरे धन कोश के साथ धान्यकोश भी राम के साथ जाएं–

धान्यकोशश्च यः कश्चिद् धनकोशश्च मामकः।
तौ राममनुगच्छेतां वसन्तं निर्जने वने।।[20]

कोष्ठागारम्, 'कोष्ठागारायुधागारैः आदि के उल्लेख भी प्राप्त होते हैं। राजकीय सुरक्षा और संवर्धन के कारण ही राजा अनरण्य के सुशासन में अनावृष्टि न होने से कृषि कार्य पर्याप्त रहा और कभी अकाल नहीं पड़ा–

नानावृष्टिर्बभूवास्मिन् न दुर्भिक्षः सतां वरे।
अनरण्ये महाराजे तस्करो वापि कश्चन।।[21]

इसी प्रकार सप्तम अंक में सूचित किया गया है कि वृत्रासुर के राज्य में भूमि बिना बोए–जोते ही अन्न उत्पन्न करती थी– 'अकृष्टपच्या पृथिवी सुसम्पन्ना महात्मनः।[22]

राजकीय संरक्षण के अभाव में कृषि–व्यवस्था अव्यवस्थित हो जाती है। राजा से रहित देश में सर्वत्र अशांति और अराजकता का वातावरण रहता है, ऐसी अवस्था में न तो खेतों में पर्याप्त बीज बोए जाते हैं, न मेघ वर्षण करते हैं और न ही कृषक भयमुक्त हो अच्छा काम कर पाते हैं, यथोक्तम् –

नाराजके जनपदे ..... अभिवर्षति पर्जन्यो .....।[23]
नाराजके जनपदे बीजमुष्टिः प्रकीर्यते।[24]
नाराजके जनपदे धनवन्तः सुरक्षिताः।
शेरते विवृतद्वारा कृषिगोरक्षजीविनः।।[25]

3. कृषि उपकरण तथा विविध धान्यः–

'रामायण' में यत्र तत्र अनेक प्रकार के अन्नों का वर्णन मिलता है, जिनमें तण्डुल, तिल, मूँग, चना, माष,[26] यव, गोधूम, शालि–तण्डुल, लाजा[27] आदि प्रमुख हैं। यथा–

वाष्पाच्छन्नान्यरण्यानि यवगोधूमवन्ति च।[28]
शाल्यादीनि पवित्राणि भोजनार्थमकल्पयत्।[29]
शालितण्डुलसम्पूर्णामिक्षुकाण्डरसोदकाम्।[30]

कोशल जनपद में अन्न की बहुलता पर्याप्त रूप से देखने को मिलती है। यथा–

अन्नकूटाश्च दृश्यन्ते वहवः पर्वतोपमाः[31]

भोज्य पदार्थ में भक्ष्य, पेय, चोष्य, लेह्य आदि सभी का विवेचन अनेक स्थानों पर किया गया है।[32] कृषि के उपकरण के रूप में हल का ही उल्लेख मिलता है।[33] भूमि के जोतने के साधन के रूप में बैल प्रयुक्त किये जाते थे। इस प्रसंग में भरत द्वारा वर्णित इन्द्र और सुरभि का वर्णन दृष्टव्य है–

एतौ दृष्ट्वा कृशौ दीनौ सूर्यरश्मिप्रतापितौ।
वध्यमानौ बलीवर्दौ कर्षकेण दुरात्मना।।[34]

साथ ही खेती को पकने के लिए तदनुकूल समय की भी अपेक्षा रहती थी–

'कालोऽप्यङ्गीभवत्यत्र सस्यानामिव पक्तये।'[35]

4. ऋतुओं के अनुसार कृषिः–

अनेक ऋतुओं के अनुसार कृषि की स्थिति का उल्लेख रामायण में प्राप्त होता है। जैसे वर्षा ऋतु में पृथ्वी हरी भरी खेती और वनों से रमणीय हो जाती है।[36] तथा शरद ऋतु की आगमन बेला में मेघों द्वारा अनाज को पकाकर शान्त हो जाना– निर्वर्तयित्वा सस्यानि कृतकर्मा व्यवस्थितः।[37] इसी प्रकार शरदकाल में धान का पकना– 'शालिवनं विपक्वम्'[38] आदि वर्णन प्राप्त होते हैं।

5. सिंचाई के साधनः–

रामायणकाल में कृषि की सिंचाई का प्रमुख साधन वर्षा थी। मेघों को अमृततुल्य माना जाता था।

'काले वर्षति पर्जन्यः पातयन्नमृतं पयः।[39]

राजा दशरथ कहते हैं, कि प्रजा को मुझसे अधिक राम उसी प्रकार प्रिय है, जैसे वर्षा करने वाले मेघ– 'मत्तः प्रियतरो लोके पर्जन्य इव वृष्टिमान्'।[40] हवा और धूप से सूख जाने के कारण नष्ट प्राय भी बीज वर्षा के जल से सिंचित होकर फिर से हरा हो जाता है– 'वातातपक्लान्तमिव प्रणष्टं, वर्षेण बीजं प्रति

संजहर्ष। हनुमान से श्री राम का कुशल समाचार जानकर सीता हर्षाधिक्य से वैसे ही रोमाञ्चित हो गई जैसे वर्षा का पानी पड़ने से आधी जली हुई खेती वाली भूमि हरी–भरी हो जाती है और भी अनेक उल्लेख रामायण में मिलते हैं, जैसे– 'कामवर्षी च पर्जन्यः,[41] जलसिक्तं यथा सस्यं पुनर्जीवितमाप्तवान्।[42] राम राज्य में समय पर मेघ बरसते थे और सुभिक्ष रहता था– 'काले वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षं विमला दिशः।[43] रामायणकालीन समाज में वर्षा के अतिरिक्त नहर, कुएँ, बावड़ियाँ, जलाशयों तथा बाँध आदि की भी सिंचाई के लिए व्यवस्था की जाती थी। जैसे कि अयोध्याकण्ड में श्री राम से मिलने के लिए जाते हुए भरत द्वारा मार्ग में सरोवर, कुएँ, बावड़ी आदि का निर्माण कराया गया। यथा–

अचिरेण मु कालेन परिवाहन् बहूदकान्।
चक्रुर्बहुविधाकारान् सागरप्रतिमान् बहून।।[44]
निर्जलेषु च देशेषु खानयामासुस्तमान्।
उदपानान् बहुविधान् वेदिकापरिमाण्डितान्।।[45]

इसी प्रसंग में बाँध निर्माण को भी बताया गया है कि जहाँ पुल बाँधने योग्य पानी देखा गया, वहाँ बाँध बना दिये गये तथा आवश्यकता होने पर जल कटाव भी किया गया–

बबन्धुर्बन्धनीयांश्च क्षोद्यान् संचुक्षुदुस्तथा।
बिभुदुर्भेदनीयांश्च तांस्तान् देशान् नरास्तदा।।[46]

अन्यत्र –

स निरर्थं गतजले सेतुं बन्धितुमिच्छति।[47]
वारिवेगेन महता भिन्नः सेतुरिव क्षरन्।[48]

कोशल में स्थित अयोध्या की भूमि को अदेवामातृका[49] अर्थात् वर्षा पर निर्भर न रहने वाली कहा गया है, जो सिंचाई के पर्याप्त साधनों की उपस्थिति को ही इंगित करती है।

7. प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित कृषिः–

कृषि कर्म के लिए अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, बंजर भूमि, ओलों की वर्षा इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं का भी वर्णन प्राप्त होता है। जैसे रोमपाद नाम के राजा के द्वारा अधर्म का आचरण करने से उसके देश में घोर अनावृष्टि हुई– 'अनावृष्टिः सुघोरा वै सर्वलोकभयावहाः।[50] मुनि ऋष्यश्रृंग केनगर में प्रवेश करने से वहाँ वर्षा हो पाई। इसी प्रकार लगभग दस वर्ष अनावृष्टि के कारण सारा लोक दग्ध होने लगा था 'दशवर्षाण्यनावृष्ट्या दग्धे लोके निरन्तरम्। तब धर्मपरायण अनसूया ने अपनी कठोर तपस्या द्वारा वर्षा करवाकर उससे निवारण किया तथा वृत्रासुर का वध करने से ब्रह्महत्या रूपी पाप से इन्द्र के ग्रसित होने पर भी अनावृष्टि का उल्लेख मिलता है– 'भूमिश्च ध्वस्तसंकाशा निःस्नेहा शुष्ककानना। ..... सत्त्वानामनावृष्टिकृतोऽभवत्।।[51]

खेतों को नष्ट करने वाले टिड्डी दल का भी एक स्थान पर उल्लेख किया गया है–

'शलभा इव केदारं मशका इव पावकम् .....'[52]

एक स्थान पर कृषि के बाधक ओलो की वर्षा का उल्लेख किया है – 'अश्मवर्षेण महता भृत्यास्ते विनिपातिताः।[53] श्री राम के राज्य में दुर्भिक्ष का कोई भय न था – दुर्भिक्षभयवर्जितः।[54] इस प्रकार अनेक प्राकृतिक आपदाओं का यत्र तत्र निदर्शन होता है जो कृषि के लिए बाधक है।

इस प्रकार सम्पूर्ण प्रकरण पर दृष्टिपात करते हुए निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि रामायणकालीन समाज में कृषि व्यवस्था पर्याप्त विकसित अवस्था में थी। कृषि सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान अर्थात कृषि विज्ञान का पूर्ण अस्तित्त्व था। वहाँ अनेक प्रकार की फसलें ऋतुओं के अनुसार की जाती थी। कृषि राजकीय संरक्षण में संवर्धित थी। यद्यपि वहाँ वैज्ञानिक उपकरण नही थे किन्तु धान्य की समृद्धता ही देखने को मिलती है। वहाँ वर्षा की प्रधानता के साथ सिंचाई के पर्याप्त साधन विद्यमान थे। धार्मिक कृत्यों के द्वारा

प्राकृतिक आपदाओं से कृषि की सुरक्षा की जाती थी। उस काल के जनपद समृद्ध, सम्पन्न और धनधान्यपूर्ण थे।

संदर्भ सूची :

1. वाल्मीकिरामायण – 1.5.5
2. तत्रैव – 1.56.37
3. तत्रैव – 1.6.11
4. तत्रैव – 1.6.10
5. तत्रैव – 2.34.41
6. तत्रैव – 2.39.3
7. तत्रैव – 2.50.8
8. तत्रैव – 2.33.10ं
9. तत्रैव – 1.25.24
10. तत्रैव – 1.25.28–29
11. तत्रैव – 1.32.10
12. तत्रैव – 2.49.13
13. तत्रैव – 2.52.101
14. तत्रैव – 3.35.25–26
15. तत्रैव – 7.70.10
16. तत्रैव – 1.66.13–14
17. तत्रैव – 2.118.29
18. तत्रैव – 2.100.48
19. तत्रैव – 2.100.47
20. तत्रैव – 2.36.7
21. तत्रैव – 2.110.10
22. तत्रैव – 7.84.8
23. तत्रैव – 2.67.9
24. तत्रैव – 2.67.10
25. तत्रैव – 2.67.18
26. तत्रैव – 7.91.19–20
27. तत्रैव – 1.53.2, 2.32.20
28. तत्रैव – 3.16.16
29. तत्रैव – 7.82.3
30. तत्रैव – 1.5.17
31. तत्रैव – 1.4.15
32. तत्रैव – 2.50.39, 1.53.23
33. तत्रैव – 2.118.28
34. तत्रैव – 2.74.23
35. तत्रैव – 3.49.27
36. तत्रैव – 4.28.26
37. तत्रैव – 4.30.22
38. तत्रैव – 4.30.53, 57
39. तत्रैव – 7.41.20
40. तत्रैव – 2.1.38
41. तत्रैव – 6.128.103
42. तत्रैव – 7.36.4
43. तत्रैव – 7.99.13
44. तत्रैव – 2.80.11

45. तत्रैव – 2.80.12
46. तत्रैव – 2.80.10
47. [47] तत्रैव – 2.18.23
48. [48] तत्रैव – 6.128.4
49. [49] तत्रैव – 2.100.45
50. [50] तत्रैव – 1.9.9
51. [51] तत्रैव – 7.86.4–5
52. [52] तत्रैव – 7.7.3
53. [53] तत्रैव – 7.59.13
54. [54] तत्रैव – 1.1.90